Gurukul International Multidisciplinary
Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2409III07V12P0014

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on
Scientific Research
Issue–II(VIII), Volume–XII

महात्मा गांधी के विचार: एक विश्लेषण

डॉ0 अनामिका
सहायक प्रोफेसर, रामा देवी कन्या महाविद्यालय, नोएडा
डॉ0 रजनी बाला
सहायक प्रोफेसर, रामा देवी कन्या महाविद्यालय, नोएडा

सारांश

महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव भारत और विश्व में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और नैतिक बदलाव के रूप में देखा जा सकता है। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा, श्रम और आत्म-निर्भरता को जीवन के केंद्रीय सिद्धांतों के रूप में अपनाया। उनके विचार न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि समाज सुधार, स्त्री अधिकार और शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने जीवनभर सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए समाज में समानता और न्याय की पैरवी की। गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। उन्होंने स्त्री और पुरुष के समान अधिकारों के पक्ष में भी मजबूत आवाज उठाई और मानवीय मूल्यों जैसे कि दया, क्षमा और त्याग पर जोर दिया। उनके विचारों ने न केवल भारत बल्कि दुनिया भर में लोगों को प्रेरित किया और आज भी उनके आदर्श समाज और व्यक्तिगत जीवन में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

संकेत शब्द : महात्मा गांधी, महात्मा गांधी के विचार

भूमिका

महात्मा गांधी, जिन्हें हम "बापू" और "राष्ट्रपिता" के नाम से जानते हैं, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे। उनके विचार और कार्यों ने न केवल भारतीय समाज पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी गहरा प्रभाव डाला। उनके विचार सार्वभौमिक हैं जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। गांधी जी के विचारों का सार सत्य और अहिंसा पर आधारित था और उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इन्हीं सिद्धांतों का पालन किया। इस शोध पत्र में गांधी जी के प्रमुख विचारों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

1. सत्य और अहिंसा

गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को अपने जीवन के केंद्रीय सिद्धांतों के रूप में अपनाया। उन्होंने अपनी आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में स्पष्ट किया कि सत्य का अर्थ उनके लिए केवल भौतिक सत्य नहीं है, बल्कि यह वाणी और विचार का भी सत्य है। गांधी जी ने सत्य को परमात्मा के समकक्ष रखा और अहिंसा को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाया। उनके अनुसार, अहिंसा कायरता नहीं, बल्कि प्रेम और शांति की प्रेरक शक्ति है।

गांधी जी ने अहिंसा को केवल बाहरी स्तर पर नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और आत्म-नियंत्रण से भी जोड़ा। उनका मानना था कि जब व्यक्ति अपनी आंतरिक हिंसा को समाप्त करता है तभी वह सच्चे अर्थ में अहिंसा को

अपनाने में सक्षम हो सकता है। उन्होंने अहिंसा को एक सक्रिय शक्ति के रूप में देखा जो अन्याय और अत्याचार के खिलाफ खड़े होने का साहस प्रदान करती है। उनका विश्वास था कि जब लोग अहिंसा के मार्ग को अपनाएंगे, तब समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा।

गांधी जी ने यह भी कहा कि सच्चाई की खोज में कई चुनौतियाँ आएँगी लेकिन उन चुनौतियों का सामना करना और सत्य के मार्ग पर निरंतर चलना ही सच्चा बलिदान है। उनका यह विचार "सत्याग्रह" के सिद्धांत में स्पष्ट होता है, जिसमें उन्होंने बल का सहारा लिए बिना सत्य के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि बिना किसी हिंसा के भी बड़े से बड़े अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा सकती है।

2. शिक्षा पर गांधी जी के विचार

गांधी जी का मानना था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता की सेवा के लिए आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा को एक ऐसा साधन माना जो व्यक्ति के हाथ, मस्तिष्क और आत्मा के संतुलित विकास को सुनिश्चित करता है। उनके अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए जबकि अंग्रेजी शिक्षा को उन्होंने गौण स्थान पर रखने का सुझाव दिया। इसके अतिरिक्त, उनका यह भी मानना था कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को व्यावहारिक और नैतिक गुणों की प्राप्ति होनी चाहिए।

गांधी जी ने "नवीन शिक्षा" की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें व्यावहारिक ज्ञान और नैतिक शिक्षा का समावेश होना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं बल्कि एक बेहतर नागरिक का निर्माण करना होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए अत्यावश्यक माना जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने समाज के प्रति जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा का माध्यम सरल और स्पष्ट होना चाहिए ताकि सभी लोग इसे आसानी से समझ सकें। गांधी जी ने स्कूलों में नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना ताकि विद्यार्थियों में मानवता और सहानुभूति का विकास हो सके।

3. श्रम और कर्म के प्रति विचार

गांधी जी का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हर व्यक्ति श्रम करेगा तो समाज में गरीबी और भूखमरी की समस्या समाप्त हो जाएगी। उनका विचार था कि श्रम के बिना समाज का विकास संभव नहीं है और श्रम से व्यक्ति आत्मसम्मान और अनुशासन प्राप्त करता है।

गांधी जी ने यह भी कहा कि भिक्षावृत्ति का अंत तभी हो सकता है जब समाज में प्रत्येक व्यक्ति श्रमशील बने और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करे। उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए भी आवाज उठाई और उनके श्रम का सम्मान करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उनका यह विश्वास था कि जब लोग अपने काम को ईमानदारी से करेंगे तो समाज में एक नई ऊर्जा का संचार होगा। गांधी जी ने व्यक्तिगत श्रम को समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना और इसके माध्यम से ही व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम उठाए।

4. नारी के प्रति गांधी जी के विचार

गांधी जी ने नारी शक्ति को समाज का महत्वपूर्ण अंग माना। उनका विचार था कि स्त्री पुरुष से अधिक उन्नत है और उसे अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने पर्दा प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया और नारी को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया।

गांधी जी के अनुसार, स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों को समान अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने नारी शिक्षा के महत्व को समझते हुए कहा कि जब स्त्रियाँ शिक्षित होंगी, तभी समाज में सच्चे परिवर्तन आएंगे। उन्होंने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए कई आंदोलनों में भाग लिया और उन्हें प्रेरित किया कि वे अपने लिए खड़े हों।

गांधी जी ने यह भी माना कि महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें समाज में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। उनका मानना था कि जब महिलाएँ स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों के लिए लड़ेंगी, तब समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा।

5. विवाह और परिवार के प्रति विचार

गांधी जी का मानना था कि विवाह एक पवित्र बंधन है और इसे वासना से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों से सीखा कि विवाह में पति और पत्नी को मित्रता का संबंध होना चाहिए न कि स्वामी और सेविका का। उन्होंने बाल विवाह और जबरन विवाह का विरोध किया और इसे समाज के लिए हानिकारक बताया।

गांधी जी ने यह स्पष्ट किया कि विवाह केवल सामाजिक बंधन नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी भी है। उन्होंने विवाह को एक साझेदारी के रूप में देखा जिसमें दोनों साथी एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि विवाह में प्रेम और समझ होना चाहिए जिससे परिवार का वातावरण सुखद और संतोषजनक हो। उनका यह विचार था कि जब परिवार में प्रेम और सहयोग होता है तब ही समाज का विकास संभव है।

6. सामाजिक समानता और छुआछूत

गांधी जी ने छुआछूत को समाज का सबसे बड़ा दोष माना और इसके उन्मूलन के लिए कड़े कदम उठाए। उनका मानना था कि जब तक समाज से छुआछूत समाप्त नहीं होगी तब तक सच्चे धर्म की स्थापना संभव नहीं है। उन्होंने समाज में हर व्यक्ति को समान अधिकार दिए जाने की बात की चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, या समुदाय का हो।

गांधी जी ने "हरिजन" शब्द का उपयोग किया, जिससे उन्होंने उन लोगों का सम्मान किया जो छुआछूत का शिकार थे। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए और समाज को इस प्रकार की सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए।

उनका यह भी मानना था कि छुआछूत के खिलाफ लड़ाई केवल कानून बनाने से नहीं होगी, बल्कि लोगों के विचार और मानसिकता में भी बदलाव लाना होगा। उन्होंने समाज में समानता की भावना को बढ़ावा देने के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया और लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया।

7. स्वदेशी और मशीनीकरण पर विचार

गांधी जी स्वदेशी वस्त्रों और वस्तुओं के बड़े समर्थक थे। उनका मानना था कि स्वदेशी उद्योगों से देश की आर्थिक स्थिति सुधरेगी और बेरोजगारी कम होगी। उन्होंने मशीनीकरण का विरोध किया क्योंकि इससे मानव श्रम का शोषण होता है।

गांधी जी ने "स्वदेशी आंदोलन" की स्थापना की जिसमें उन्होंने लोगों को विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। उनका यह विश्वास था कि स्वदेशी वस्त्रों को अपनाने से न केवल देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, बल्कि लोगों के बीच आत्म-सम्मान की भावना भी बढ़ेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि मशीनीकरण का उपयोग तभी करना चाहिए जब यह मानव श्रम को सरल बनाए और बेरोजगारी को बढ़ावा न दे। उनका यह मानना था कि मशीनीकरण से समाज में बेरोजगारी बढ़ सकती है इसलिए इसे संतुलित ढंग से अपनाना चाहिए।

8. नैतिकता और आस्था

गांधी जी ने अपने जीवन में नैतिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि सच्ची नैतिकता का अर्थ है अपने लिए सच्चा रास्ता खोजना और उस पर निडर होकर चलना। उन्होंने आत्मशुद्धि पर जोर दिया और कहा कि आस्था के बिना जीवन असंभव है।

गांधी जी का यह विश्वास था कि ईश्वर पर भरोसा रखकर ही व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है। उन्होंने यह कहा कि सच्ची आस्था केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कार्यों में भी प्रकट होनी चाहिए।

उनका यह मानना था कि नैतिकता का पालन करना और आत्म-नियंत्रण रखना जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि केवल बाहरी दिखावे के बजाय, आंतरिक स्वच्छता और नैतिकता अधिक महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के विचार न केवल व्यक्तिगत जीवन को, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके विचार सत्य, अहिंसा, नैतिकता, शिक्षा और समानता पर आधारित हैं जो आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

गांधी जी ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की, जो आस्था, सत्य, अहिंसा और नैतिकता पर आधारित है। उनके विचारों का अध्ययन और अनुसरण करके हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं और समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं। उनके सिद्धांत हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने अंदर की अच्छाई को पहचानें और समाज के कल्याण के लिए कार्य करें। उनके आदर्श आज भी हमारे लिए मार्गदर्शक बने हुए हैं और हमें इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

गांधी जी के विचारों से प्रेरणा लेकर, हम एक बेहतर समाज की स्थापना कर सकते हैं, जहाँ हर व्यक्ति को समान अधिकार मिलें और सभी के बीच भाईचारा हो। उनके सिद्धांतों को अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को सुधार सकते हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। गांधी जी का संदेश आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उनके समय में था और हमें इसे अपने जीवन में लागू करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. मोहन दास करम चंद गांधी, “सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा”, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
2. महादेव देसाई, “गाँधी जी इन इंडियन विलेजेज”, इस: गणेशन , मद्रास
3. सिंह राम जी, “गाँधी दर्शन मीमांसा”, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना
4. आढा डॉ0 आर. एस., “हमारे युग प्रवर्तक महापुरुष”, शिव बुक डिपो, जयपुर
5. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, “महात्मा गाँधी: एसेज एंड रिफ्लेक्सन आन हिज लाइफ एंड वर्क”, जोर्ज एलन एंड अनविद, लंदन